

अथ श्रीवैष्णवयोगोऽयम्

नयागसाऊनकायप्रयुज्ज

अथ वदन्तु तत्त्वज्ञानं यत्तु मयं नो यत्

दसताजपक्षम किं याकमे सता

यजोग्य ॥ १२ ॥ प्राह ॥

समस्तं समस्तं ॥ इति कामलकुटुम्बक

अथ विष्णुमन्त्रनामोऽयम् ॥ १३ ॥

मन्त्रेण सनादक्रान्ता जायन्ते विधायन् ॥

अथ ॥ हं अकारस्तनना सा या विदयुः मीसाङ्गरु

केलसानादिमायुः अखलस्तनसाः आयुमायुः ॥ १४ ॥

अथ गौरीदपनामिहं नृषमाह ॥ यथाहितं शतं

अथ विष्णुमन्त्रनामोऽयम् ॥ १५ ॥

अथ विष्णुमन्त्रनामोऽयम् ॥ १६ ॥

अथ विष्णुमन्त्रनामोऽयम् ॥ १७ ॥

अथ विष्णुमन्त्रनामोऽयम् ॥ १८ ॥

अथ विष्णुमन्त्रनामोऽयम् ॥ १९ ॥

विष्णुना जायते ॥ ५४ ॥ कुत्रयसन्ति तं लब्धं अयुगलं सदा र्जवं ॥ अनायका
यस्य निजायते ॥ तमकायसन्त सदा याति ह्यनिरुज आयमस्य स्य यय
ना जायाय म न ॥ ५५ ॥ मूलदृक्कि हि गाधी न ४ सद्धे न त्रय त्रिक क ॥
याय धर्माय का विधियत ॥ कयां निस्यं ना ३ ज सममु न त्रय न काया क ३
कथी न मरु ज थ थि ॥ म क स हा प ति या य ॥ ५६ ॥ आयुर्वेद क ता सा स ॥ म
पुत्र द न ॥ आर्य गां ल गु ॥ म य त ३ व वै द्या वि धा य त ॥ ५७ ॥ म आ दि न वै द्य म मु त्या
स या क ना त्रि रु द रि की त्मा सि ज या क ३ ना ज थ थि ॥ म क वै द्य या य ॥ ५८ ॥ पि रु यि ता म हा
द ३ ४ म मु ह्य मि व पा व क ॥ पु वि म क पि न ॥ म्ये व सु उ का न ४ पु म म्य त ॥ अजा व व नि

सं स यात म्भु स ग वा क र क ली च पु वि क थी स म र ज थ धि (म म्भु स वान या य ॥ ५६ ॥ स क र
क र द ही ता (थ म्भु स ग जि ता क र ४ स र्व म्भु स म नो का पु ष म ष क र य म्भु ॥ दू पा ल द्वा मु न्
मि ज आ र व न वा य वान द्वा क आ विल या रु द सि ज थ धि ग्य दू त ष क क य ॥ ५७ ॥ दू मि ता क
न वा न्द्रि य द र्भ त ॥ अ पु मा दि स द्वा द क ४ पु ती हा ल स उ य म्भु ॥ का शे या ज न्द्रि य सान रि ज
ता क (थ म्भु स ग थ धि (म म्भु स ग न दू नी दा न या य ॥ ५८ ॥ स क म्भु स ग
ज य न प द्वा वि र्द्य व न वि न थ धि (म म्भु स ता प ति धा व ॥ ५९ ॥ स म म्भु र य
न वृ द्वा जि न ४ सो र्द्य वि र्द्य उ (म म्भु स अ म्भु स वि धा य त ॥ स म म्भु स उ या सा सु सा
स म्भु स ग न वी न थ धि (म म्भु स वान या य ॥ ६० ॥ म म्भु वि वा क र द्वा ४ प न वि र्द्य

मरु ॥ १२४ ॥ जमूखीथा मन्थानां मन्थसंगतवत्तसां ॥ यत्र स नाथ काय मूर्साहवतिवी
 ग्रह ॥ मुखे मरु जमन्थान समस्तका र्वन्मालसतया जातयुतायनस्य जयकावली
 पुमाधूजनयाविग्रहरुयु ॥ १२५ ॥ उकादना ४ पृथग्रीवायवत्र किमहाधुव ॥ जसाधि
 ताविनम्य निहेतुम् ॥ १२६ ॥ मातुद्यागलया ० ॥ भले समस्त सवा द हेतु ॥ १२७ ॥ य
 नामभ्रमधिधिं वेतिहावयाकाजनिर्क्रमत्युक्तज ॥ धुननथज क्रवेतियाय मगज ॥ १२८ ॥ य
 समस्तिकुब्धीन यनकनापिसंहता ॥ मृकवानल ॥ १२९ ॥ यनादासलधिर्यथा ॥ विपणिक
 तनाससूयाकुरुजनाशाकावर्तलतुयमालया नामवन्दुनभाकनहात्रसाहयेयाकाज्या
 पदातनयार्थ ॥ १३० ॥ इस्तरासाग ॥ १३१ ॥ समग्रीवानलवत् ॥ अहतापूर्वनामनसुव

धृष्टसागत्र ॥ महासागत्रसमस्त विक्रधत्ताननसहयत्ताने शात्रामवलुनसुवध
आकथननसमस्तानकाज विक्रधत्तानसहयत्ताने ॥ १३२ ॥ सूर्यमगत्रयपंक्
विनाधयनस्यत्र ॥ पलेनाकुम्भमानसुवयपक्षरानगती ॥ यद्विचित्रताजाइयो
धनहादावृस्कनगतद्विष्टकिजजिपनिंद्यक्रूरकाज विनाधयाकाजावाकागं॥ १३३ ॥
स्यायमालकासमिभिगतद्विष्टाकाकाइशयमान ॥ १३३ ॥ हिलावयनकर्मोदिकृत्वा
वेनिमग्नकक ॥ लूतयः समगायाति यः यनः यनः यनः ॥ वृद्धरुदनं वै नि साधन
धमाल ॥ यथाकथञ्चययनकयनशयी ग्यवेनसर्वे निधजशयमइ ॥ १३४ ॥ विना
कनामनूयानां जुग्वनामैथूनहना ॥ जसोहाग्वहनमुदममातयाहन ॥ मनुष्याया

१६

आतातदा त ३ ४ रव हा गिन ४॥ आतामर्चतु या हू हू य मित ३ ४ ध ६ ल ३ ८
व ल ३ ८ ध ३ ८ आताया संखा ३ ८ ध ३ ८ न ध ३ ८ प नि स ३ ८ र स्व सित ३ ८ ध ३ ८ न ल ३ ८
१५२ ॥ ज ३ ८ मे या नि ३ ८ दु ना वि का न ३ ८ न ३ ८ मे या प ३ ८ उ वा न ३ ८ न ॥ ज ३ ८ मे या वि ध वा ना नी पु ३ ८ य
उ पु ष्ठि ३ ८ न ॥ ध ३ ८ न म ३ ८ इ ध ३ ८ प ष्ठि ३ ८ न का य का य म ३ ८ इ ध ३ ८ म नू या हा न ता म ३ ८ इ मि सा ध ३ ८ न ब ३ ८ गु वि
ध ३ ८ य ॥ १५३ ॥ वि रु वा ॥ स ३ ८ ध ३ ८ वे पु ३ ८ ध ३ ८ न न ग नी ना दि दे हि न ॥ यो धु म ता पि न ३ ८ न ३ ८ ध ३ ८ य स्या मि
वि पु र्ने ध ३ ८ न ॥ स ३ ८ म स ३ ८ ना क न ३ ८ ध ३ ८ न थु का पु जा या न ग नी न पु जा त म ध ३ ८ न द त सा पा ध ३ ८ मि
थ ३ ८ न थु का उ र्क म ॥ १५४ ॥ ध ३ ८ न मा इ य र्ने ध ३ ८ भो ध ३ ८ ने ॥ स ३ ८ ध ३ ८ पु मि ष्ठि ३ ८ न ॥ जा व नि ध नि ना
ना क मृ ता य हा ध ना न ना ॥ स ३ ८ म स ३ ८ ध ३ ८ मे पु मि ष्ठि ३ ८ ना या ध ३ ८ न न थु का ध ३ ८ न न ध ३ ८ न र ३ ८ ध ३ ८ म

कक्षयधनमइद्रुसिकक्षय ॥ १४५ ॥ जगत्सम्यदमायत्र रुदयं यत्तनाहुर्व ॥ जस्य
वमिखेनानुर ॥ सख्यं वज्रं ही पागित ॥ जवातसंपत्तिदत्तं कोसं कृत्वा न ज्ञायिष्यते ॥
ग ॥ यथा ज्ञाते पर्वतं वज्रं न कया ज्ञेयं तानां यथ ॥ १४६ ॥ कुरु कुरु कुरु कानि ह्येक
सूखा निवृत्ता गिनां यस्यां ह्यर्थं सत्तु सा कथं तस्य स वं मृद ॥ स कर्त्ता न ज्ञाया अरु
कुरु सदा लो ग न वज्रं कया सुखं ह्येकं यथ मय यथि क ना त म इ ॥ इर्थं यं ज व
सा म इ ध्रु कया ह्यसुर ॥ १४७ ॥ सर्वं यत्तव मं इ ॥ सर्वं सर्वं मा त्म व स ॥ सर्वं ॥ उत्तदिष्टा
समा सज न कृ ही सुख इ ॥ इव यो ॥ इव धाय मव या व सा स या न सु ख धाय म व
सा य ध्रु न सुख यं इ व यो न कृ ही थु लि ॥ १४८ ॥ सा रि कृ क ये कानि ह्येक

ॐ

न॥ नीवदयूमां विद्यां मुनसुखादपि ॥ विषसधानसां अमृतवमुकायत॥ अमृताय ॥
शानसां लुकायत॥ निवयाकं शानसां उरुमविद्याकायत॥ अमृतसधानसां मुनसुखा
यत॥ ॥ १०५ ॥ कसं दाषं कुलनामिद्याधिनानाकायत॥ कनंतद्वसुनं पापं शिव ॥ तस्य
नीनकायत॥ सूर्यांकुनसं दावमइ शकनमकडा मूदडा ॥ सूर्याइ रवमइ ॥ निनक्तनसं यलि
सूर्याइ ॥ १०६ ॥ दाषाय सिमु (॥ यलि निमु (॥ यलि जायत ॥ सुकमालस्य यदस्य नाशु
वतिककम ॥ दाषं मुदा सूर्यामइ यनस्यानथि कामल धुया वकाव धुधं दृष्टान्त ॥ १०७ ॥
अमृतमिमित्रवक्त्रि ॥ अमृतं जायत राजनं ॥ अमृतं मुदावतिरुथी ॥ अमृतं वायुहायितं ॥ नि
कुना न अमृतं अग्निं जायत ॥ अमृतं ॥ कासडा ककनात अमृतं ॥ मायानरवं कायुं अमृतं

॥१७॥ इल्लरु प्राकृति वा ॥ इल्लरु मु क मी प्रु ॥ इल्लरु वसुद नानी इल्लरु वव नं विर्य ।
प्राकृति वव नं इल्लरु कुमा व न क साह वै इल्लरु हिताथ क व नात इल्लरु गाय क २७ क य
स ग क इल्लरु ॥१७॥ नदी नां जा क वी (गुषु नानी नां व प्रतिवु ता ॥ म नू या नां नृ ४ जा क
द ग म नां य उ निरु ता ॥ न दि स ग म (गुषु मी सां या प्रतिवु ता क (गुषु म नू य स रा जा (गुषु
द ग म दा य गु सि (गुषु ॥१७॥ प्रु पौ उ उ ना की रू दा सी स स मा वे ना ॥ रु यो वि न
हि तं यू सां य थ न र्थ ग म गृ ह ॥ ग्व क या हू स का य हू य व न र्था गी नी द त सी थ म थ
या (थ क ना त म इ थु क या हू व न उ स मा न ॥१७॥ स वै धा म व त र्त्ता नां म्ना यं त र्त्त म
नू रु म ॥ त स्मा रु द र्थ नि न ता त या ल्य का ध न न कि ॥ अ न ग त र्त्त द या उ या न र्त्त ग ध

५१

तु श्रुति अर्क हाव सु (मष हाव नु मा ॥ विष्णु ॥ स्मन हा या उ हा म रु तां क न सं यु ट ॥ ११ ॥ म हा द
व स ना म या य ॥ अर्क पा ग हा या हा व नु मा व सु क्क या हा ॥ विष्णु स्मन हा या हा ॥ त हा ध द
म नु श क क हा थ हा न पा हा ॥ १२३ ॥ ल ख क ४ पा ० क (ध्व व य वा न्य म म रु चि न का ४ सर्व
य स नि ना मूर्त्वा ॥ क्रि या व न ग य प लि त ॥ आ ख ल शी क क्क पा ० या क क्क म्म सु स हा प नि स क
लं मूर्त्वा ध य ॥ ग्व क्क ४ म्म न या क्रि या स ल थ क्क प लि त ध य ॥ १२४ ॥ वा रु ह्य म ग्व वा नि र्क्ष ॥
ना ज स वा न पा या ध न ॥ धा ना म्म त्या नी क्क र्त्वा नि रु वि रु र्त्वा नि का त ना ॥ म व न ज स उ व न ज
ना ज स वा न प स्मा ॥ धा न म्म न प नि स म या य ॥ का त ल प नि स न क्षा क्क या य ॥ १२५ ॥ पु ज ध ना
था वा नि र्क्ष ॥ वि शो र्था व व क्क म्म र्त्वा ॥ मृ ग काल म प त्या र्था ॥ मा ना र्था न य नि रु ज ० ॥ ध न द य

कृतव नञया य विद्यासयकतम सुकृतं ॥ कायदयकत कनागया ज्ञुका नसुगमनय
 य ॥ मान्यदयकत ॥ नागया सवाया य ॥ २२० ॥ नृखे पद्मद नाकारे वावाचनगीतल ॥ क
 दयकलि संयुक्त ॥ निविधं धृत्वा नकुल ॥ खानपयस्थानथ ॥ वयनशारे सुध ॥ नृगलकलतिथ
 ॥ श्रुता ॥ धृत्वा नकुल ॥ २२१ ॥ इत्थं न ॥ प्रियवादि व ॥ नेव विग्नसका न ॥ मधुघ वमि मिश्रा
 कृदिहा नाहलं पृथ ॥ इत्थं ननमव ॥ नृथं खंकायु ॥ ॥ अवि ॥ यस्या यमता ॥ कुतुहलक कसि
 थं नृगन हाक ॥ सुध ॥ २२२ ॥ खल ॥ सर्वपमाता वि ॥ यनहि डा तिपथती ॥ आत्मना विले
 माता ति ॥ पथन निनयथती ॥ इत्थं नन ॥ मवया दानसा ॥ नीनका वह खल ॥ थडा का
 सा ॥ द्यात्व व हनसा ॥ सुत्र किडा ॥ थथि ॥ इत्थं नया खला व ॥ २२३ ॥ दर्भनी या भवथ म

五

मूर्खो धनवन्तश्च निर्गुणः दुष्टं विवदं मयि कांशु का वृ वयुषिका ॥ मूर्खं ॥ धनव
जं ॥ धनं नीहयता यि मलाहा सिंवाहा लथं रवमर ॥ २३० ॥ मूर्खो वाच निरुक्त य
पुण्यं जाति यदयं ॥ हिंसा न वाच मल्यत ॥ अदृश्यं कुरु कायध ॥ मूर्खं यावदवत वला
नकय काथं ॥ गथे धलसा ॥ विधिधनयुत नकया अयथरु न धर्थ ॥ २३१ ॥ सूर्यः क
नन ॥ ४२४ ॥ मन्त्रोषधिवग ॥ सूर्यः ॥ ४२५ ॥ कनायश्ममन ॥ सूर्यं महाजीक इर्जन
महाजीक ॥ सूर्यया सिन ॥ इर्जनकजीक ॥ गधनसा ॥ मन्त्रोषधिन ॥ सूर्यो साधयाम
जीक ॥ इर्जनकजीक ॥ ४२६ ॥ यथा नमजिग ॥ २३२ ॥ हलीरुसुसुहृमुदा ॥ अतुरुसुनवाजिन
॥ ४२७ ॥ ४२८ ॥ ४२९ ॥ ४३० ॥ ४३१ ॥ ४३२ ॥ ४३३ ॥ ४३४ ॥ ४३५ ॥ ४३६ ॥ ४३७ ॥ ४३८ ॥ ४३९ ॥ ४४० ॥

गच्छि कृपाक वा नमाल ॥ ८३ ॥ जि कृपाक वा नमाल ॥ इज्ज नक्क अदस गाठ ता नपालरु
यु ॥ २३३ ॥ इज्ज न ४ य निरु रु या ॥ भम सुहा लं कृ पा य दि ॥ मनी ना रु वि ग ॥ सूर्य ॥ विम सो न
रु यं क ल ४ ॥ ग्य द्ध स न ॥ ८४ ॥ भम सु स ल सा ॥ इज्ज नक्क गाठ ता माल गा ॥ थ क न सा न न क म हि
मा हि कृ या नि सा न ति या ठा न सां सूर्य रु य द्ध ल थ ॥ २३४ ॥ रु मि ना द्ध ग ह स्र हा ॥ क वि रु स्र हा
वा जि ना ४ ॥ गृ ४ ॥ त उ ठ रु स्र न ॥ रु ४ ॥ रु स्र हा इज्ज नात् ॥ कि सि अ न्द क ग जा ढा अ चा न ॥ स उ
अ व गा क जा ढा अ चा न्य ॥ ८५ ॥ अ उ गा म जा ढा अ चा न्य ॥ इज्ज नक्क अ व ४ ॥ जा ढा अ चा न ॥ २३५ ॥
पा ठा पा ठ वि ॥ भ व न ॥ ८६ ॥ य च न ग यी र्थ ॥ रु स्र हा मि गु व म ऊ रं क्री मा नि गु व त वि र्थ ॥ पा ठा
पा ठ धु नि ढ अ ॥ सा न द्य च न र्थ नं रं वि न ॥ सूर्य न रं रं ना नं वि र्थ रं कृ पा या अ वि ल ॥ २३६ ॥

वृत्तगणस्या । मृत्तम्या (महाद्याल ॥ २४७ ॥ यद्वा त्ववध विष्वात्मः मूर्खांकलहा त्वव ॥
युत्र धा त्ववध ॥ नानी हर्षा गदात्मश्चर (महात्त्वव ॥ वाक्कटायाउत्साहयः ॥ मूर्खायाउत्साहत्याय
याय । मीसायाउत्साहहानहा । सायाउत्साहयाय ॥ २४८ ॥ अमिहाउरुनवदं । गालवृहिरुस
गुरु ॥ नतीयुगुरुनाना । दलुकुरुलंघन ॥ ध्वसयायारुल अमिहागीकय । ममुठकाया
भीनरुनके ॥ मिसागमनयायुउदयक ॥ धनदयाया । दानरुनयाय ॥ २४९ ॥ अमिर्द्धहगीग
धन । सूर्यादरुतिनभिहि ॥ नाजादरुताद (मुन ॥ गयसावाक्क (मदह ॥ अमानदग्गयाय
गायन ॥ सूर्यादरुनपि । किनन नागानदरुनपि दलुन वाक्कटानदरुनपि । गयश्चन ॥ २५० ॥
सनसाकंमृगंमासं । कनहामर्थितंदधि ॥ गुरु न्यादमद्यवध ॥ तुत्या (मसां स रकुटी ॥ नातया

लः सि क या नाः वा ह न न हि का ध रिः वा न न वा द यः धृ तं (ग म मी स तु ल्य ॥ २६८ ॥ न ह न या
न म गि द द्याः ह न य मा ध न द म्भ तं ॥ ए य ४ म का य नि ल्य झ रु न मां स य धि वि त्र ॥ थ म स्मा य
म म ग ज स्मा क य म ग ज स्मा क ल य म ग ज धृ ल ता ग उ ता ज ॥ नान अ म ग ज रु य धि वि त्र ध
क ॥ २२० ॥ न सां सरु क हां दा वः न म द्य न व मे धू न ॥ उ वृ हि त व रु ता नां नि वृ हि तु म हा
रु ल ॥ नान या न धृ ता न नः का म स व स या न दा व म इः अ ध न ग उ न रु ल ॥ २२१ ॥ व तु सा
ग न य यो नः या द द्या ल्प धि वी मी मां ॥ न र्वा द्य वा पि या मा स तु ल्य म त वि र्व ध ॥ य य लि सा ग ल
न द्या ज पृ धि वी दा न ग्व द्र स नः या त धृ तु लि यू ध ॥ नान य ग उ तु क न ना त ॥ २२२ ॥ अ धि ना व
भि या मूर्त्त स य ना ज कु ना नि य ॥ नि ल म वा य या स न स द्य प्रा ष ह वा ति ष्ट ॥ अ धि ल व मी सा

४०